International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(2): 209-210

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(2): 209-210
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 20-10-2021
Accepted: 26-12-2021

Sakib Ali
Research Scholar, School of Sanskrit and Indic Studies (SSIS) Jawahar Lal Nehru University, New Delhi, India

Dr. Ram Nath Jha
Prof. Ram Nath Jha, School of Sanskrit and Indic Studies (SSIS) Jawahar Lal Nehru University, New Delhi, India

Tara Chand Khuraw
Research Scholar, School of Sanskrit and Indic Studies (SSIS) Jawahar Lal Nehru University, New Delhi, India

Corresponding Author:
Sakib Ali
Research Scholar, School of Sanskrit and Indic Studies (SSIS) Jawahar Lal Nehru University, New Delhi, India

संस्कृत शोध एवं उसके प्रकार

Sakib Ali, Dr. Ram Nath Jha and Tara Chand Khuraw

प्रस्तावना

भारतीय सभ्यता के उदय से चिन्तन मनन के विषय में उपलब्ध विश्व प्राचीन ग्रन्थ ऋग्वेद में ऋषि दृष्टताओं ने अनेक तत्त्वों का विवेचन प्रस्तुत किया यह तत्त्व विवेचन आधुनिक समय में शोध के रूप में जाना जाता है।

शोध–

अंग्रेजी भाषा में Re+Search तो शब्दों से मिलकर बना है जिसका अर्थ है ''किसी क्षेत्र में क्रमबद्ध तरीके से तत्त्व का अन्वेषण ''

> ''अनुसंधान प्रकृतिक घटनाओं के बीच निर्धारित सम्बन्धों के बारे में काल्पनिक प्रास्तावों के व्यवस्थित नियंत्रित अनुभवजन्य और महत्वपूर्ण जांच है।''
>
> (Fred N. Kerlinger)
>
> ''प्रयत्नपूर्वक या महत्वपूर्ण जाँच या परीक्षा में तथ्यों या सिद्धान्तो की तलाश करना (Clifford woody)

पश्चिमी विद्वानों ने शोध के विषय अपने अलग–अलग मत प्रस्तुत किये हैं। सम्पूर्ण विश्व में यह विचार धारा अर्थात मानसिकता बनी हुयी है कि पश्चिमी विद्वान किसी विषय पर अपना मत प्रस्तुत करते हैं तो वह स्वीकार योग्य एवं सबसे महत्वपूर्ण तथा सर्वोपरि माना जाता है । यह दृष्टिकोण उचित नहीं है यह एक प्रकार से सत्ता परक सोच प्रतीत होती है? यदि संस्कृत क्षेत्र में देखो तो शोध प्राचीन समय से ऋषि गणों का उद्देश्य रहा है। विश्व का उपलब्ध प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद है। जो शोध का आरम्भकर्ता है। शोध को अन्य शब्दों में खोज, अनसंधान, अन्वेषण भी कहा जाता है। ऋग्वेदानुसार ''मनुष्य की बुद्धि प्राचीन समय से 'अहम' (आत्मा) इदम् (सृष्टि या जगत) सः (ब्रहम) को जानने का आरम्भ से ही अन्वेषण करता आ रहा है।''
उपनिषदकार कहते है–

> ''हिरण्यमयेन पाश्रेण सत्यस्य अपिहितं मुखम''
> तत्त्वं पूषत्रपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये।।
>
> ईशा मन्त्रा :15

हिरणयम पात्र प्रतीकात्मक शब्द है। जो माया या अज्ञान का द्योतक है। सत्य अर्थात ज्ञान अज्ञान के आवरण में छिपा रहता है। उसे निवारण करने का कार्य ''तत्त्वदर्शी (अन्वेषक) का है। वह आप्त को निष्क्रय भाव से स्वीकार नहीं करता।

कालिदास कहते है

> पुराणमित्येव न साधु सर्वम न चापिकाव्य नवमित्यवघम्
> संतः परीक्षान्तरद भजन्ते मढ़ः पर प्रत्ययनेय वृद्धिः।
>
> (मालविकाग्निमित्र)

''नई सृष्टि का अर्थ यह हुआ कि यह न ही पुराने क्रमों की नकल करती है। न ही उनकी मौलिक सच्चाई के विपरीत जाती है। वह पुराने क्रमों की हमारी समझ को नए सन्दर्भों में ढालती है। और उसके साथ–साथ हमारे जानने के आयाम को विस्तृत करती है।

अनेक प्रमाणों के आधार पर यह प्रतीत होता है। कि शोध एक प्राचीन परम्परा है। जो ज्ञान के क्षेत्र में निरन्तर चलती रहती है। इसकी कोई सीमा निहित नहीं है। वर्तमान में इसे वैज्ञानिक तरीके से प्रस्तुत किया गया है।

शोध के प्रकार

शोध का मुख्य उद्देश्य ''वैज्ञानिक तरीके से अनुमानित परीकल्पना के आधार पर किसी तथ्य या सिद्धान्त को सिद्ध करना है।'' सामान्य दृष्टि से शोध दो प्रकार (Pure Research) शुद्ध शोध तथा (Practical or Action Research) यदि काल की दृष्टि से तीन प्रकार के होते है। 1. ऐतिहासिक शोध 2. व्याख्यात्मक शोध 3. प्रयोगात्मक शोध परन्तु भारतीय संस्कृत शोध परम्परा के अनुसार शोध के प्रकार निम्न है।

तथ्यान्वेषण – (Discovery of Facts)

हिन्दी भाषा में 'अन्वेषण' शब्द का अर्थ 'खोज' है। यही शब्द प्रसिद्ध भी है। साहित्य अन्वेषण की दृष्टि से यह अनेक प्रकार का होता है।

1. अज्ञात से ज्ञान

लेखकों ने अज्ञात ग्रन्थों का अन्बेषण और उनके भेद भी किये है। अब यह ग्रन्थ ज्ञात है।

उदाहरण– विभिन्न प्रकार की वनस्पतियो का उल्लेख आयुर्वेद ग्रन्थों में किया गया है। जैसे–पर्वतारोहीओं

2. अनुपलब्ध से उपलब्ध

ज्ञान किसी विषय पर अनुपलब्ध होता है तो विद्वानों द्वारा उसे उपलब्ध कराया जाता है?

उदाहरण

डा0 गणपती शास्त्री ने अनुपलब्ध भास के नाटकों को 1913 ई0 में उपलब्ध कराया।

3. विचारों या सिद्धान्तों की खोज :– किसी भी विचार परम्परा तथा उसका विकासक्रम निर्देश तथा पालन के अनुसार किया जाता है।

उदाहरण

स्वामी दयानंद तथा अरबिदों द्वारा वैदिक सिद्धान्तों की व्याख्या करना।

तथ्याख्यान (प्दजमतचतमजंजपवद वि बिजे)

तथ्य तथा आख्यान परस्पर सम्बन्धित है। विचारों द्वारा तथ्य पर पहुंचना तथा अन्त में व्याख्या की जाती है।

1. **व्यक्तीकरण :** अनेक उलझे तथा बिना समझे एवं न दिखाई देने वाले तथ्यों को विद्वानों के द्वारा प्रकट किया जाना तथा उनके रहस्यों का उद्घाटन किया गया है।

उदाहरण – मैक्समूलर, बी–कीथ दास गुप्ता द्वारा अनेक तथ्यों का खुलासा किया गया है।

2. **स्पष्टीकरण :** वास्तविकता के अनुकुल किसी तथ्य को विद्वानों द्वारा साक्ष्य का प्रयोग करके उसकी प्रमाणिकता को प्रस्तुत करना ही स्पष्टीकरण कहलाता है।

उदाहरण – संस्कृत में टिप्पणीकारो की परम्परा का आरम्भ होना। स्वामी दयानन्द, रामानुजाचार्य

3. विहितीकरण

जहाँ विद्वानो के बीच तथ्यों की प्रस्तुति के बारे में मतभेद हो तो विद्वान अपने मत को स्वतन्त्र प्रस्तुत करता है।

उदाहरण

वेदान्त – मधुसूदन सरस्वती

व्याकरण– वैयाकरण सिद्धान्त मंजूषा

तथ्याशोधन (Refinement of facts)

तथ्यों से सत्य पर पहुंचना एक प्रक्रिया है। यह शोध का आवश्यक अंग है। तथ्य का शब्दार्थ है। ''ठीक यथा अस्तित्व होने का वैसा भाव''। दूसरे शब्दों में तथ्य का अर्थ है –''यथार्थ , यथार्थता अतः तथ्यों के आधार पर सत्य शोध साम्रगी का शोधन किया जाता है।

1. **पाठ विषयक** : यह व्यापक क्षेत्र है। उद्देशों को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करता है। पाठ विषयक के अन्तर्गत शोधार्थी अपने विषय के अनुसार प्रमाणित तथ्यों का चयन करता है।

उदाहरण

शोधन के माध्यम से पांडुलिपि की प्रतियां तैयार करना

2. **विचार विषयक** : इसमें विद्वान एक विचार से सम्बंध रखता है और अपनी दृष्टि से उस विचार के प्रसार हेतु कार्य करता है।

उदाहरण

अनुसंधान के लिए शब्दकोश जैसे उपकरण तैयार करना –न्यायकोश, मीमांसाकोश

निष्कर्ष

वर्तमान में पश्चिमी शोंध का प्रचार–प्रसार बहुत अधिक दिखाई देता है। इसी कारण भारतीय संस्कृत शोध पद्वति गौण प्रतीत होती है। इस कारण को ध्यान में रखकर भारतीय संस्कृत शोध पद्वति के अनुसार अनुसद्यान की परिभाषा को सरल एवं सहज तरीके से प्रस्तुत करने का प्रयास किया हैं।

प्राथमिक स्त्रोंत : (Books)

1. डा0 नगेन्द्र, अनुसंधान प्रविधि प्रकिया; नवदेहलीः राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, 2010
2. डा0 विनय मोहन शर्मा, शोध प्रविधि दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाउस प्रकाशन, 1973
3. डा0 सत्यनारायण आचार्य, संस्कृत शोध प्रविधि, तिरूपतिः राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, 2012

द्वितीय स्त्रोंत

1. प्रो0 सत्यमूर्ति, आधुनिक सन्दर्भ में संस्कृत शोध परम्परा, नई दिल्लीः जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय
2. गूगल सर्च, शोध व तथ्य विश्लेषण
3. PDF-65B5D350-DOCS48DE